Research Paper Education

Shahari Avam Gramin Khetra ke uchchhatar Madhymik vidhyalaya ke kishoravastha vidhyarthiyo me manovignanik paramarsh ki aavashyakta ka ak tulnatmak adhyayan

Dr. (Smt.) Nisha Shrivastava	HOD, Education Department, Ghanshyam Singh Arya Kanya Mahavidyalaya, Durg(C.G.)
Smt. Hiteshwari Ravte	Asst. Professor, Education Dept.Ghanshyam Singh Arya Kanya Mahavidyalaya, Durg(C.G.)
Deepika Yadav	M.Ed. Student, Ghanshyam Singh Arya Kanya, Mahavidyalaya, Durg(C.G.)

ABSTRACT

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोरावस्था विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता का एक तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोरावस्था विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श हेतु षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों (षहरी क्षेत्र के विद्यालय के 100 विद्यार्थी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के 100 विद्यार्थी) का चयन किया गया है। मनोवैज्ञानिक परामर्श आवश्यकता के अध्ययन हेतु डॉ.विजय लक्ष्मी चौहान एवं गुजंन गनोत्रा अरोरा द्वारा निर्मित मापनी उपकरण का उपयोग किया गया है। प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण 'टी' मूल्य द्वारा किया गया है। शोध अध्ययन में षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोरावस्था विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता में सार्थक अंतर पाया गया।

KEYWORDS

प्रस्तावना– मोनिका शर्मा(2013)– किशोरावस्था विद्यार्थियों व उनके माता –पिता के मध्य संबंधों का अध्ययन किया। शोध अध्ययन के अनुसार किशोरावस्था विद्यार्थी और माता–पिता के बीच संबंधों में लड़कियॉ अपने माता–पिता से अपनी परेशानियों को या आवश्यकताओं को खुलकर बताते है परंतु लड़के अपने माता–पिता से उतने करीब नही होते है।एम.के.सुल्तानिया एवं अन्नपूर्णा तिवारी(2008)– महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में चिंता, शत्रुता, व उदासी की भावना का अध्ययन किया। शोध अध्ययन के अनुसार लड़कियों में चिंता व उदासी की भावना अधिक पायी जाती है क्योंकि वे सामाजिक स्थिति से बहुत प्रभावित होती है। अतः उनके अन्दर उच्च स्थान प्राप्त करने की या समाज में अपनी स्थिति बनाने के लिए सदैव चिंतित रहती है। सुधा दुबे एवं भारती भटनागर(2005)– किशोरावस्था में मानसिक स्वास्थ्य व पारस्परिक क्रिया द्वारा व्यक्तित्व विकास का अध्ययन किया। शोध अध्ययन के अनुसार बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में सहनशीलता, उदारता, भावात्मक स्थिरता व समायोजन क्षमता अधिक पायी जाती है। पार्कस जे.व्हाइट (2007)–किशोरो में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अध्ययन किया। शोध अध्ययन के अनुसार उन विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक समस्याएं होती है जिनमें उनके माता–पिता या परिवार के सदस्यों द्वारा देखभाल नही की जाती है ऐसे बच्चे स्वयं को उपेक्षित महसूस करते है व उनके अंदर स्वयं के लिए घृणा की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। ए.जी.हेमनाथ कुमार(2003)–किशोरावस्था बालिकाओं में अपराधों को रोकने की प्रवृत्ति के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया। शोध अध्ययन के अनुसार जिन बा. लिकाओं को उनके माता–पिता का सहयोग प्राप्त होता है तथा जिनके शिक्षक उनको प्रोत्साहित करते है वे हमेशा अपराधों को रोकने के लिए जागरूक रहते है वहीं जिन बालिकाओं में दबाव होता है वे अपराध होने पर भी कोई ठोस कदम नही उठा पाती।

उद्देश्य–

- षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोरावस्था विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के किशोर छात्र एवं षहरी क्षेत्र के किशोर छात्र के मध्य मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के किशोर छात्राओं एवं षहरी क्षेत्र के किशोर छात्राओं के मध्य मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के षहरी क्षेत्र के किशोर छात्र एवं किशोर छात्राओं के मध्य मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के किशोर छात्राओं एवं किशोर छात्र के मध्य मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

न्यादर्श– प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श हेतु षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों (षहरी क्षेत्र के विद्यालय के 100 विद्यार्थी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के 100 विद्यार्थी) का चयन किया गया है।

उपकरण–प्रस्तुत शोध में मनोवैज्ञानिक परामर्श आवश्यकता के अध्ययन हेतु डॉ.विजय लक्ष्मी चौहान एवं गुजंन गनोत्रा अरोरा द्वारा निर्मित मापनी उपकरण का उपयोग किया गया है।

परिकल्पना एवं विश्लेषण–

H_1 षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोरावस्था विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 1

क्रं.	चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी' मूल्य
1.	षहरी विद्यार्थी	100	70.31	4.82	7.92''
2.	ग्रामीण विद्यार्थी	100	75.7	4.83	

''0.01 स्तर पर सार्थकता, '0.05 स्तर पर सार्थकता, •• Not Significant

सारणी क्रमांक – 1 का अवलोकन करने पर कि198 पर ज का मान 7.92 प्राप्त हुअ. ा। P<.01 स्तर पर ज का मान सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोरावस्था विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना H_1 अस्वीकृत होती है।

H_2 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के किशोर छात्र एवं षहरी क्षेत्र के किशोर छात्र के मध्य मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 2

क्रं.	चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी' मूल्य
1.	षहरी छात्र	50	71.66	4.69	4.52''
2.	ग्रामीण छात्र	50	76.86	6.63	

''0.01 स्तर पर सार्थकता, '0.05 स्तर पर सार्थकता, •• Not Significant

सारणी क्रमांक – 2 का अवलोकन करने पर df =98 पर ज का मान 4.52 प्राप्त हुआ। P<.01 स्तर पर ज का मान सार्थक नही है। अतः स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के किशोर छात्र एवं षहरी क्षेत्र के किशोर छात्र के मध्य मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना H_2 अस्वीकृत होती है।

H_3 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के किशोर छात्राओं एवं षहरी क्षेत्र के किशोर छात्राओं के मध्य मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 3

क्रं.	चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी' मूल्य
1.	षहरी छात्रा	50	68.96	4.94	7.57 ''
2.	ग्रामीण छात्रा	50	74.54	1.66	

''0.01 स्तर पर सार्थकता, '0.05 स्तर पर सार्थकता, •• Not Significant

सारणी क्रमांक – 3 का अवलोकन करने पर df =98 पर ज का मान 7.57 प्राप्त हुअ. ा। P<.01 स्तर पर ज का मान सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक

विद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के किशोर छात्राओं एवं षहरी क्षेत्र के किशोर छात्राओं के मध्य मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना H_3 अस्वीकृत होती है।

H_4 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के षहरी क्षेत्र के किशोर छात्र एवं षहरी क्षेत्र के किशोर छात्राओं के मध्य मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 4

क्रं.	चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी' मूल्य
1.	षहरी छात्र	50	71.66	4.69	2.80''
2.	षहरी छात्रा	50	68.96	4.94	
''0.01 स्तर पर सार्थकता, '0.05 स्तर पर सार्थकता, •• Not Significant					

सारणी क्रमांक – 4 का अवलोकन करने पर df =98 पर ज का मान 2.80 प्राप्त हुअ. ा। P<.01 स्तर पर ज का मान सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के षहरी क्षेत्र के किशोर छात्र एवं षहरी क्षेत्र के किशोर छात्राओं के मध्य मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना H_3 अस्वीकृत होती है।

H_5 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के किशोर छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र के किशोर छात्र के मध्य मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 5

क्रं.	चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी' मूल्य
1.	ग्रामीण छात्रा	50	76.86	6.63	2.39 '
2.	ग्रामीण छात्र	50	74.54	1.66	
''0.01 स्तर पर सार्थकता, '0.05 स्तर पर सार्थकता, •• Not Significant					

सारणी क्रमांक – 5 का अवलोकन करने पर df =98 पर ज का मान 2.39 प्राप्त हुआ। P<.05 स्तर पर ज का मान सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के किशोर छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र के किशोर छात्र के मध्य मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना H_3 अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोरावस्था विद्या. र्थियों में मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता में अंतर पाया गया क्योंकि षहरी क्षेत्र में विद्यार्थियों को किशोरावस्था के दौरान पर्याप्त परामर्श दिया जाता है विद्यालय में शिक्षको द्वारा विद्यार्थियों को समय–समय पर कार्यशाला आयोजित कर व विभिन्न कार्यक्रमों के द्व ारा शिक्षा दी जाती है तथा उन्हे किशोरावस्था में होने वाले परिवर्तनों के बारे में भी ज्ञान प्रदान किया जाता है, षहरी क्षेत्र के अभिभावक ज्यादातर शिक्षित होते है वे भी अपने बच्चो को उचित मार्गदर्शन देते है इसके विपरित ग्रामीण क्षेत्र में अभिभावक अपने बच्चों को पर्याप्त ज्ञान नही दे पाते है जिस वजह से ग्रामीण विद्यार्थी मानसिक रूप से ज्यादा परिपक्व नही हो पाते है, इस वजह से षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता में अंतर पाया गया ।

सुझाव–

- विद्यालय में विद्यार्थियों को मनोविज्ञान पढ़ाने के लिये पृथक कक्षा की सुविधा दी जानी चाहिए।
- विद्यालय में मनोवैज्ञानिक परामर्श केन्द्र बनाया जाना चाहिए।
- विद्यालय में मनोवैज्ञानिक परामर्श संबंधित चिकित्सा केन्द्र की व्यवस्था होनी चाहिए।
- प्रत्येक साल में बच्चों के लिए मनोवैज्ञानिक परामर्श केन्द्र लगाने का कार्यक्रम रखा जाना चाहिये।
- विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता से संबंधित जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए।
- विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक परामर्श से संबंधित संगोश्ठी, समाचार, सम्मेलन का आयोजन किया जाना चाहिए।
- उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के पाठ्यक्रम में मनोविज्ञान के साथ परामर्श को समावेश किया जाना चाहिए।

REFERENCES

• asthana, b. (2005), measurement and evaluation in psychology and educational, Vinod Pustak Mandir,Agra,630-642. | • barodiya, a., & agrawal, n. methodology educational research and educational statics. agra: radha prakasan mandir,18-44 | • pandey, k. p., & pandey, a. (2003). educational and vocational guidence. agra: vinod pustak mandir. | • dubey, r.(2002-4), bases of educational and vocational guidance,Vasundhara Prakashan:Gorakhpur,227-245. | • jaiswal, s.(2003), guidance and counselling in educationa Vinod Pustak Mandir,Agra,218-231. | • kapil, h. k.(2015), research methodology,Kachhari ghat,Agra,74-85. | • obray, s. p. (2004),educational,vocational guidance and conselling,International Publishing House:Merath,264,290. | • panday, r. (2013),educational psychology, ,R.Lal Book Deepo:Merath,133-141. | • sareen, s. a. (2012),educational research methods,Agrawal Publication:Kanpur,27-55,118-120. | • sharma, R.(2014) ,fundamental of educational research and statistics,R.Lal Book Deepo:Merath,23-48,194-196. | • sharma, r. k.(2007) ,philosophical and sociological foundations of education,Radha Prakashan:Agra,1,9. | • shukla, o. p.(2002),educational psychology,Bharat Prakashan:Lakhnow,1-17 | • verma, r.(1997-98), educational and vocational guidance,Vinod Pustak Mandir,Agra,97-112. | • Sharma, S.R. (2006), Science Education, New Delhi : Arjun Publication House, 51-52. | • Singh, A.K. (2008), The Psychology Of Personality Delhi Motilal Varanasi Das Publication,1-17. | • Singh, R., Sharma, O.P. (2007-08),Educational Research And Statistics, Agra-2 Agrwal Publication,118- 218. |